University in News on 25 August 2025

AMAR UJALA MY CITY
PAGE 7

विद्यार्थियों ने जाना इतिहास संरक्षित करने का अनोखा तरीका

लखनऊ। राज्य पुरातत्व निदेशालय की ओर से चल रहे पुरातत्व अभिरुचि पाठ्यक्रम के तहत रविवार को विद्यार्थियों ने रेजीडेंसी परिसर का भ्रमण किया। इस दौरान इतिहास में रुचि रखने वाले प्रतिभागियों को यह सिखाया गया कि सदियों पहले अभिलेखों को कैसे संरक्षित किया जाता था और ऐतिहासिक घटनाओं की पहचान किन तरीकों से होती रही है।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को स्याही की मदद से कागज पर रेजीडेंसी के ऐतिहासिक अभिलेख उकेरने की प्रक्रिया भी सिखाई गई। भ्रमण कार्यक्रम से पहले लखनऊ विवि के इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव ने प्राचीन भारतीय पुरातत्व के दो प्रमुख केंद्रों धौलवीरा (गुजरात) और राखीगढ़ी (हरियाणा) की आवासीय सभ्यता के बारे में विस्तार से बताया।

तृतीय सत्र में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सहायक एपिग्राफी विशेषज्ञ डॉ. राजेश कन्नौजिया ने इंस्क्रिप्शन का स्टांप लेने और उसके उद्ध-वाचन की प्रक्रिया का डेमोंस्ट्रेशन किया। प्रतिभागियों को इस दौरान प्रत्यक्ष प्रैक्टिकल अभ्यास भी करवाया गया। (संवाद)

JAGRAN CITY PAGE I, III

नैनो कंपोजिट से हड्डी का पुनर्निर्माण जल्द, रुकेगी कैंसर सेल की ग्रोथ

अखिल सक्सेना • जागरण

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग ने एक ऐसा नया नैनो कंपोजिट विकसित किया है जो भविष्य में अस्थि प्रत्यारोपण, हड्डी पुनर्निर्माण और कैंसर उपचार के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प बन सकता है।

यह शोध विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. सीआर गौतम के नेतृत्व में शोधार्थी डा. सर्वेश कुमार अविनाशी ने जंतु विज्ञान विभाग की प्रो. मोनिषा बनर्जी, आइआइटी बीएचयू के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग के प्रो. राकेश कुमार गौतम, भौतिक विज्ञान विभाग के प्रो. होरेश कुमार और एनआइटी राउरकेला के जंतु विज्ञान विभाग की प्रो. मोनालिसा मिश्रा के सहयोग से किया है। इस शोध को रायल सोसाइटी आफ केमिस्ट्री के प्रतिष्ठित जर्नल न्यू जर्नल आफ केमिस्ट्री में हाल ही में प्रकाशित किया गया है, जिससे इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है। भौतिक विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. सीआर गौतम ने बताया कि शोध दल ने हाइड्राक्सीएपेटाइट-टाइटेनियम कार्बाइड-सिल्वर (एचएपी-टीआइसी-एजी) का एक नया नैनो-कंपोजिट तैयार किया है। इसमें उत्कृष्ट यांत्रिक और जैविक गुण पाए गए हैं, जो हड्डी के पुनर्निर्माण में सहायक हैं। साथ ही कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को रोकने में प्रभावी साबित हुए हैं। शोध टीम ने हाइड्राक्सीएपेटाइट और सिल्वर नैनोकणों को ग्रीन सिंथेसिस और माइक्रोवेव तकनीक से तैयार किया, जबकि हाइड्राक्सीपेटाइट-टाइटेनियम कार्बाइड-सिल्वरकम्पोजिट का निर्माण सालिड-स्टेट रिएक्शन पद्धति से किया गया है। इसकी संरचना, मजबूती और जैविक प्रतिक्रिया का विश्लेषण एक्स-रे डिफरेक्शन, फूरियर ट्रांसफार्म इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोस्कोपी (एफटीआइआर) रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी, स्कैनिंग इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपी, ट्रांसमिशन इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोपी और अन्य उन्नत तकनीकों के माध्यम से किया गया।

लवि के भौतिक विज्ञान विभाग में (दाएं से बाएं) शोधार्थी डा. सर्वेश कुमार अविनाश, एसोसिएट प्रोफेसर सीआर गौतम और शोधार्थी राखी ने मिलकर बायो कंपोजिट सामग्री का निर्माण किया • सौ. स्वयं

लखनऊ विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. सीआर गौतम के नेतृत्व में हुआ शोध न्यू जर्नल आफ केमिस्ट्री में प्रकाशित

शोध में ये आए परिणाम

शोध परिणामों के मुताबिक एचटीए-6 (6 प्रतिशत सिल्वर डोप्ड हाइड्राक्सीएपेटाइट-टाइटेनियम कार्बाइड-सिल्वर नैनो-कंपोजिट) नामक सैंपल ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। जैविक परीक्षणों में यह नैनो कंपोजिट हड्डी कोशिकाओं के विकास पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं डालता। वहीं, कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को प्रभावी रूप से रोकता भी है। साथ ही, यह बैक्टीरिया-रोधी और गैर-विषैला भी पाया गया। शोधकर्ताओं का मानना है कि यह नैनो कंपोजिट भविष्य में अस्थि प्रत्यारोपण, हड्डी पुनर्निर्माण और कैंसर उपचार के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प बन सकता है।

AMRIT VICHAR PAGE 8

लविवि के दीक्षांत समारोह में होगा फैशन शो

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- सात दिनों तक होंगी 14 तरह की प्रतियोगिताएं

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह आगामी 10 सितंबर को होने जा रहा है जिसके लिए जोर शोर से तैयारियां की जा रही हैं। सभी विभाग के शिक्षकों के अवकाश दीक्षांत समारोह तक अस्वीकृत कर दिए गए हैं और विभागों को तैयारी को लेकर निर्देश जारी किया गया है।

विश्वविद्यालय की संस्था सांस्कृतिकी ने दीक्षांत समारोह को लेकर विस्तृत रुपरेखा तैयार किया है जिसमें 14 तरह की प्रतियोगिताएं होंगी। गायन, नृत्य, काव्यपाठ, फैशन शो समेत अन्य कार्यक्रम 1 से 7 सितंबर तक आयोजित किए जाएंगे। एकल गायन, समूह गायन, एकल नृत्य, समूह नृत्य जिसमें प्रतिभागी शास्त्रीय नृत्य, अर्धशास्त्रीय और लोक नृत्य प्रस्तुत करेंगे। वाद्ययंत्र वादन, नाटक, मिमिक्री, परिधान उत्सव जिसमें विभिन्न राज्यों के पारंपरिक परिधान आदि की प्रतियोगिता होगी।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, क्वीज प्रतियोगिता, वाद-विवाद, कविता पाठ, तत्क्षणवाक, पोस्टर निर्माण, पेटिंग जैसी प्रतियोगिता विश्वविद्यालय में 1 सितंबर से आरंभ कर दी जाएंगी। छात्र-छात्राएं अधिकतम दो प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले सकते हैं। विश्वविद्यालय की ओर से स्पष्ट किया गया है कि छात्र सदैव शालीन भाषा का प्रयोग करेंगे, यदि कोई भी शब्द अशालीन होता है तो प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाएगा।

पुनर्वास विवि में राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का आयोजन

■ **अमृत विचार, लखनऊ :** डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग में नेशनल एसोसिएशन ऑफ प्रॉफ़ेशनल सोशल वर्कर्स इन इंडिया के तत्वाधान में राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह मनाया गया। विभाग के डॉ. रूपेश कुमार सिंह, सह आचार्य व समन्वयक, एनएपीएसडब्ल्यूआई के राष्ट्रीय सचिव प्रो. अनूप भारतीय, डॉ. मोहम्मद नईम ने विचार रखे। मुख्य वक्ता विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अवधेश कुमार रहे। समाज कार्य विभाग प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जु भैया) विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. गीतांजली श्रीवास्तव ने उपशामक देखभाल, वृद्धावस्था देखभाल एवं बच्चों की देखभाल में चिकित्सीय समाज कार्य के अवसरों पर चर्चा की। संचालन विभाग के सहायक प्रो. डॉ. श्याम सिंह ने किया। आभार छात्र परख लांबा ने जताया। डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. अवधेश कुमार, डॉ. श्याम सिंह, डॉ. मनीष द्विवेदी, डॉ. नीरजा सिंह, डॉ. डी. के. सिंह, डॉ. प्रभात सिंह उपस्थित रहे।

एलयूआरएन में पंजीकरण का आज आखिरी मौका

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों में दाखिले की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। विश्वविद्यालय ने प्रवेश के लिए अनिवार्य किए गए लखनऊ विश्वविद्यालय रजिस्ट्रेशन नंबर (एलयूआरएन) में पंजीकरण की अंतिम तिथि 25 अगस्त तय कर रखी है। ऐसे में अभी तक जिन अभ्यर्थियों ने पंजीकरण नहीं कराया है, उनके पास सोमवार को मौका है। वहीं, डीएवी डिग्री कालेज, केकेसी, केकेवी, मुमताज सहित शहर के कई डिग्री कालेजों में अभी स्नातक और परास्नातक कोर्सों में सीटें खाली हैं।

बीटेक विद्यार्थी हास्टल के लिए 27 तक करें पंजीकरण

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.टेक प्रथम सेमेस्टर की विभिन्न शाखाओं में नव प्रवेशित अभ्यर्थी छात्रावास के लिए 27 अगस्त तक 50 रुपये जमा करके एचएमएस पोर्टल के माध्यम से आनलाइन पंजीकरण कराना होगा। अभ्यर्थी 28 अगस्त तक सभी आवश्यक दस्तावेज अपलोड करके आवेदन की औपचारिकताएं पूरी कर सकते हैं। चीफ प्रोवोस्ट प्रो. अनूप कुमार सिंह ने इसका नोटिफिकेशन रविवार को वेबसाइट पर जारी किया। अभ्यर्थियों को एचएमएस ऐप में दिए गए छात्रावास नियमों को ध्यानपूर्वक पढ़ना होगा। आवेदन में किसी भी प्रकार की समस्या होने पर अभ्यर्थियों को एचएमएस पोर्टल पर ही हेल्पडेस्क में अपनी शिकायत दर्ज करानी होगी। एचएमएस ऐप का लिंक https://www.luhostel.in/ है। बी.टेक प्रथम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं के अलावा किसी अन्य को आवेदन नहीं करना है, अन्यथा वे अपनी बारी आने पर आगे आवेदन नहीं कर पाएंगे।

'शिल्प कला में निपुण थे धोलावीरा के निवासी'

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव ने कहा कि धोलावीरा (गुजरात) व राखीगढ़ी (हरियाणा) प्राचीन भारतीय पुरातत्व के दो महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। नए उत्खननों से पता चलता है कि यहां के निवासी कृषि, पशुपालन एवं शिल्प-कला में निपुण थे। प्रो. श्रीवास्तव पुरातत्व निदेशालय की ओर से आयोजित अभिरुचि पाठ्यक्रम कार्यशाला में रविवार को बोल रहे थे।

प्रो. श्रीवास्तव ने धोलावीरा व राखीगढ़ी की आवासीय सभ्यता पर विस्तार से प्रकाश डाला। बताया कि धोलावीरा सिंधु घाटी सभ्यता का अद्वितीय नगरीय केंद्र रहा, जहां सुव्यवस्थित नगर-योजना, जल-संरक्षण प्रणाली तथा विशाल आवासीय परिसर इसकी विशिष्ट विशेषताएं रही हैं। राखीगढ़ी को अब तक का सबसे बड़ा हड़प्पाई नगर माना गया है।